



गर्भ चेतावनी  
 श्री तेजराम जी महाराज कृत  
 (०६ दोहा छन्द और २७ कवित छंद)  
 टीका सहित  
 स्वाध्याय एवं चिंतन हेतु  
 टीकाकार - जेट्टू दास वेदान्ती



## टीकाकार की लेखनी से -

‘गर्भ चेतावनी’ संत तेजराम जी महाराज की वह कालजयी रचना है, जो मनुष्य को उसके अस्तित्व के मूल और ईश्वर के प्रति उसके विस्मृत वादों की याद दिलाती है। ३३ दोहों और कवित्त छंदों में रचित यह कृति केवल काव्य नहीं, बल्कि आत्म-साक्षात्कार का एक दर्पण है। इस ग्रंथ की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

१. स्मृति का जागरण: महाराज जी ने गर्भवास के उन कठिन १० महीनों का सजीव चित्रण किया है, जहाँ जीव ‘अधोमुख’ (उल्टा) लटका हुआ परमात्मा से रक्षा की गुहार लगाता है। यह पुस्तक याद दिलाती है कि हमने जन्म से पूर्व ईश्वर से क्या ‘कौल’ (वाद) किया था।

२. साधना का मार्ग: इन छंदों के माध्यम से संत श्री ने यह स्पष्ट किया है कि मानव देह केवल भोग के लिए नहीं, बल्कि उस ‘दीनदयाल’ की भक्ति के लिए मिली है जिसने हमें जठराग्नि के ताप से बचाया।

३. सरल भाषा, गहरा भाव: राजस्थानी मिश्रित सरल हिंदी और गेय छंदों (दोहा व कवित्त) के कारण यह रचना जन-सामान्य के हृदय में सीधे उतर जाती है।

आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ मनुष्य सांसारिक मायाजाल में उलझकर अपने मूल लक्ष्य को भूल गया है, वहाँ यह ‘गर्भ चेतावनी’ एक मार्गदर्शक मशाल की तरह है। यह हमें सचेत करती है कि— “राम रटू ताते ताय, जिते जिव्या चाल है” अर्थात् जब तक प्राण हैं, उस परमात्मा का स्मरण ही जीवन की सार्थकता है।

### घनाक्षरी छंद

आतम विचारै जोई, तत्त्व को निहारै सोई  
 ,मानुष जनम ताहि, सफल सुजान रे ।  
 ज्ञान की डगर चलै, आतम में ध्यान धरै,  
 पावै सो मुक्ति - पद, परम निर्वाण रे ॥  
 भोग और मोह तजि, विषय विलास तजि,  
 पशु - सम व्यर्थ आयु अपनी गँवान रे ।  
 कहै ‘जेठू दास’ सुन, भज ले तू राम नाम,  
 कठिन चौरासी माँहि, होय घमासान रे ॥

अर्थ- जो व्यक्ति अपनी आत्मा का विचार (आत्म-मंथन) करता है, वही वास्तविक सत्य (तत्त्व) को देख पाता है। हे बुद्धिमान मनुष्य! उसी का मानव जन्म लेना सफल माना जाता है जो स्वयं को जानने का प्रयास करता है। जो मनुष्य ज्ञान के मार्ग पर चलता है और अपनी

आत्मा में ध्यान लगाता है, वह परम पद यानी मोक्ष (निर्वाण) को प्राप्त कर लेता है। हमें सांसारिक भोग-विलास और मोह-माया का त्याग कर देना चाहिए। यदि मनुष्य केवल इंद्रियों के सुख (विषय विलास) में पड़ा रहता है, तो वह अपनी आयु को पशु के समान व्यर्थ ही गँवा देता है। जेठू दास जी कहते हैं कि हे मनुष्य ! तू भगवान के नाम (राम नाम) का भजन कर ले। यदि तू इस मोह-माया में उलझा रहा, तो चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़ना पड़ेगा, जहाँ का कष्ट और संघर्ष (घमासान) बहुत कठिन है।

आशा है कि मुमुक्षु जन और श्रद्धालु पाठक इस लघु पुस्तिका का पठन कर लाभान्वित होंगे और अपने जीवन को भक्ति मार्ग की ओर अग्रसर करेंगे।

यह लघु पुस्तक अब बाजारों में कहीं मिलती नहीं है इसलिए आम जिज्ञासु भक्तजन के स्वाध्याय एवम चिंतन हेतु सरल टीका करके सुलभ की गई है। इस गर्भ चेतावनी का मेरे पिताश्री ( भोल दास जी महाराज ) हमेशा पाठ करते थे, हमारे मन में विचार आया की यह पुस्तक सभी के पास होनी चाहिए और इसी विचार फलस्वरूप यह आपके समक्ष है । भ्रम, प्रमाद वश कहीं त्रुटी रह गई हो तो विवेकीजन सुधार कर पढ़ें और अवगत करावे।

**भवदीय – जेठू दास वेदान्ती**

बारनी खुर्द

तहसील भोपालगढ़

जोधपुर राजस्थान

दूरभाष क्रमांक -८८८२४१२५४४

## श्री तेजराम जी महाराज की गर्भ चेतावनी

॥दोहा छन्द॥

प्रथम राम गुरु वन्दना, सब ही सन्त मनाय ।

जासु जीव को काज व्है, तारत सन्त सदाय ॥१॥

**अर्थ** - सबसे पहले भगवान राम और गुरु की वंदना करके सभी संतों को मनाय (प्रणाम करना) करके । इन्हीं संतों की कृपा से मनुष्य के बिगड़े काम बनते हैं और वे ही सदैव जीव का उद्धार करते हैं।

॥दोहा छन्द॥

वरणु गर्भ चितावणी, तुम्हरी आज्ञा पाय ।

घट माहीं बिराजो सकल, दीजो बुद्धि अघाय ॥२॥

**अर्थ** - हे राम और सभी संतजन आपकी आज्ञा पाकर मैं 'गर्भ चितावणी' (सांसारिक दुखों की चेतावनी) का वर्णन कर रहा हूँ। आप सभी मेरे हृदय में निवास करें और मुझे इतनी बुद्धि दें जिससे मेरा मन तृप्त (संतुष्ट) हो जाए।

॥दोहा छन्द॥

जीव भूलग्यो राम कूं, तिनको कहूँ विचार ।

यह चेतावनी ग्रंथ सुण, जे कोड़ पकड़े सार ॥३॥

**अर्थ** - जो जीव (मनुष्य) भगवान राम को भूल गए हैं, मैं उनके बारे में विचार प्रकट कर रहा हूँ। इस 'चेतावनी ग्रंथ' को सुनकर यदि कोई इसके सार (मर्म) को समझ ले, तो उसका कल्याण हो जाएगा।

॥कवित्त॥

राम जी की कृपा भई, मिनखा जनम दर्ई ।

नख चख हाथ पांव, दीया दीनदयाल है ॥

गर्भ माहि दस मास, दोरो घणो लीयो सास ।

जठरा अगन त्रास, आतां हूँदा जाल है ॥

नीचो शीश ऊँचा पांय, सास में कलप जाय ।

राम रटू ताते ताय, जिते जिव्या चाल है ॥

कौल तो अनेक कीया, प्रभु जी तो मान लीया ।

"तेजराम" साचा पीया, काढ्यो तत्काल है ॥४॥

**अर्थ** - भगवान राम की अपार कृपा हुई, जिससे हमें यह अनमोल मनुष्य (मिनखा) जन्म प्राप्त हुआ है। उस दीनदयाल (परमात्मा) ने ही हमें नाखून, आँखें (चख), हाथ और पैर जैसे सुंदर अंग प्रदान किए हैं। माता के गर्भ में दस महीनों तक जीव ने बहुत ही कठिन (दोरो)

परिस्थितियों में सांस ली। वहाँ पेट की अग्नि (जठराग्नि) का भयंकर संताप था और आँतों के जाल के बीच जीव घिरा हुआ था। गर्भ में सिर नीचे और पैर ऊपर की ओर थे; उस अवस्था में एक-एक सांस लेना भी अत्यंत कष्टकारी (कलप) था। उस तपन और कष्ट में जीव ने यही प्रण लिया था कि जब तक मेरी जीभ चलेगी, मैं केवल राम का ही नाम रटूंगा। जीव ने (बाहर आने के लिए) प्रभु से अनेक वादे (कौल) और विनती की, जिसे दयालु प्रभु ने स्वीकार कर लिया। संत तेजराम जी कहते हैं कि वह परमात्मा ही सच्चा प्रियतम है, जिसने पुकार सुनते ही जीव को उस कष्टकारी गर्भ से तत्काल बाहर निकाला।

॥कवित्त॥

अबे तो जनम भयो, दाई ने तो झेल लीयो ।  
मीठो मीठो स्वाद दीयो जग मोहि लीयो है ॥  
बधाई बंटे है बार, घर घर बंदवारी ।  
बेटो महेतो जायो सार, धिन्न म्हारो जीयो है ॥  
पिता कहै म्हारो अंश, अबे जु बढ्यो है बंस ।  
मित्यो है मन को संश उग्र भागी कीयो है ॥  
ढोल बर्गु बाजे तासा, भूवा बेन बांधी आशा ।  
"तेज" कहै मोह पासा, झुगो टोपी सीयो है ॥५॥

**अर्थ - बालक के जन्म के समय घर में व्याप्त उल्लास और माता-पिता की खुशी का सुंदर चित्रण है।** अभी-अभी बालक का जन्म हुआ है और दाई (प्रसव कराने वाली महिला) ने उसे अपने हाथों में संभाल लिया है। बालक को (शहद या घुट्टी का) मीठा स्वाद चखाया गया है और संसार की माया (मोह-ममता) ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। द्वार-द्वार पर बधाइयाँ बांटी जा रही हैं और खुशी के प्रतीक के रूप में घर-घर में बंदनवार (तोरण) सजाए गए हैं। माता कहती है कि मैंने श्रेष्ठ पुत्र को जन्म दिया है, मेरा जीवन और मेरा अस्तित्व धन्य हो गया है। पिता गर्व से कहता है कि यह मेरा ही अंश है और अब इससे मेरा वंश आगे बढ़ गया है। मन का सारा संशय (वंश चलाने की चिंता) मिट गया है और बालक ने अपने जन्म से पिता को बड़े सौभाग्य वाला बना दिया है। खुशी में ढोल, नगाड़े और ताशे बज रहे हैं; बुआ और बहनें बालक से नई उम्मीदें और आशाएं लगा रही हैं। संत तेजराम जी कहते हैं कि मोह के इस बंधन में बंधकर परिवार ने बालक के लिए प्रेमपूर्वक झबला (झुगो) और टोपी सिली है।

॥कवित्त॥

सिसिर पणा में भाई, गोद में खेलावे माई ।

हूलरियो गावे ताई, हंग मूत भरे है ॥  
 राजी राजी धोवे जिण्णे, पालणे हींडोले तीण्णे।  
 लूण मिर्च बारे इण्णे, ऐसे मोटो करे है ॥  
 पौगंड की वेस आय, बालकों में रमे जाय।  
 दड़ी गेडयो हाथ लाय, चक्री लट्टू फेरे है ॥  
 बारे तो वर्षा के मांहि, और कछु चिन्ता नांहि।  
 "तेजराम" कहै कांहि, देखो भूल पड़े है ॥६॥

**अर्थ - बालक के जन्म से लेकर १२ वर्ष तक की आयु के लाड-प्यार और खेल-कूद का वर्णन है।** बचपन के शुरुआती दिनों में माँ स्नेहपूर्वक अपनी गोद में खिलाती है। माँ लोरी गाकर सुलाती है, और बच्चा गोद में ही मलमूत्र त्याग कर उसे गंदा करता है। माँ प्रसन्नतापूर्वक गंदगी साफ कर बच्चे को पालने में झुलाती है। बुरी नजर से बचाने के लिए नजर उतारती है और लाड-प्यार से बड़ा करती है। 'पौगंड' (५-१२ वर्ष) की अवस्था में बालक अन्य साथियों के साथ खेल में मग्न हो जाता है। हाथ में गेंद-बल्ला लेकर चकरी और लट्टू जैसे पारंपरिक खेल खेलता है। शुरुआती बारह वर्षों तक बालक को दुनिया की कोई चिंता नहीं होती। संत तेजराम जी कहते हैं कि मनुष्य बड़ा होकर माँ के इन उपकारों को भूल जाता है।

॥कवित्त॥

रेशम कोर की धोती, कानां में गोखरु मोती।  
 गले में धुग्धुगी सोती, कसूमल पाग है ॥  
 झीणी तो अंगर्खी चावे, पट्टू दी पगर्खी भावे।  
 खांदापे दुपट्टो लावे, मूंदड़ी रो आग है ॥  
 माता पिता सुखी होवे, बार बार मुख जोवे।  
 सगाई रा संज गोवे, ऐसी ज्यां रे लाग है ॥  
 बार बार पीये पाणी, बेटो तो सुपातर जाणी।  
 "तेजराम" मन मानी, अबे लागे दाग है ॥७॥

**अर्थ - सगाई के लिए सजे हुए सुपुत्र के पारंपरिक राजस्थानी पहनावे और उसे देख माता-पिता की खुशी का वर्णन है।** इसमें रेशमी धोती, आभूषण, और केसरिया पगड़ी पहने युवक के रूप को सुपात्र मानकर सराहा गया है, सांसारिक मोह-माया या जिम्मेदारियों की ओर संकेत करती है। युवक ने रेशमी किनारा वाली धोती पहनी है और कानों में गोखरू व मोती के आभूषण धारण किए हैं। गले में धुग्धुगी (गले में पहने जाने वाले हार) शोभायमान है और सिर पर गहरा लाल या केसरिया (कसूमल) रंग की पगड़ी है।

उसने महीन कपड़े की अंगरखी (कुर्ता) पहनी है और पैरों में पट्टियों वाली मोजड़ी जंच रही है। कंधे पर दुपट्टा है और अंगुलियों में पहनी अंगूठी (मूंदड़ी) आग की तरह चमक रही है। अपने सुंदर बेटे को देखकर माता-पिता अत्यंत प्रसन्न हो रहे हैं और बार-बार उसका चेहरा देख रहे हैं। सगाई के साजो-सामान की तैयारी की जा रही है और माता-पिता के मन में वैसी ही लगन या उमंग है। बेटे को सुयोग्य (सुपात्र) मानकर खुशी और गर्व के कारण माता-पिता बार-बार पानी पी रहे हैं। संत तेजराम जी कहते हैं कि यह दृश्य मनभावन है, लेकिन अब सांसारिक मोह-माया में कोई दाग (कमी) न लग जाए, ऐसी चिंता प्रकट की गई है।

॥कवित्त॥

पनरे वर्षों में भयो, माता पिता सामो रह्यो ।  
 किशोर पणां में भयो, आच्छो ब्याव कियो है ॥  
 मन में तो मोद आयो, नारी हूं तो आछी लायो।  
 अब भयो मन भायो, देख देख जीयो है ॥  
 मन माने ज्युं ही करे, माता पिता सुं नाहिं डरे।  
 अपूठो वांसू ही लड़े, नारी मोल लीयो है ॥  
 पच्चीस वर्षों में आय, तरुणाई चढ़यो जाय।  
 "तेज" कहै घणी चाय अब दुःख दीयो है ॥८॥

**अर्थ - मानव जीवन की अवस्थाओं और व्यवहार में आने वाले परिवर्तन का वर्णन।**

जब बालक पंद्रह वर्ष की आयु का हुआ, तब तक वह अपने माता-पिता के सामने (उनके सानिध्य और आज्ञा में) रहा। किशोरावस्था (युवावस्था की दहलीज) में आते ही उसका विवाह संपन्न हुआ, जो बहुत अच्छे ढंग से किया गया। विवाह के बाद मन में अत्यंत प्रसन्नता (मोद) भर गई और वह एक सुंदर व गुणवान पत्नी (नारी) घर ले आया। अब सब कुछ उसके मनचाहा (मन भायो) होने लगा और वह अपनी गृहस्थी व पत्नी को देख-देखकर हर्षित होकर जीवन जीने लगा। अब वह वही करता है जो उसका मन चाहता है; उसके मन में अब माता-पिता का डर या लिहाज नहीं रहा। वह उल्टा (अपूठो) अपने माता-पिता से ही लड़ने लगा है; ऐसा लगता है मानो उसने पत्नी के मोह में स्वयं को बेच दिया हो (मोल लीयो)। जैसे ही वह पच्चीस वर्ष की आयु में पहुँचा, उसकी युवावस्था (तरुणाई) पूरे उफान पर आ गई। संत तेजराम जी कहते हैं कि अत्यधिक मोह और इच्छाओं (चाय) के वश में होकर, उसने अब अपने माता-पिता को बहुत कष्ट देना शुरू कर दिया है।

॥कवित्त॥

साल्यां ने तो आगी लेवे, बैनां ने तो पाछी देवे।

फेरजो सालेलियां सेवे, साली आछी लाग है ॥  
 वारे तो काम में दौड़े, माता पिता सुं मुख मोड़े।  
 नारी रे तो बैठो जोड़े, लाज शर्म भाग है ॥  
 निःशंक घणरो भयो, तन धन वार दयो।  
 मेले जठे वेग गयो, नारी केरी आग है ॥  
 वाकू तो छाला ज्यूं राखे, माता ने काम रो भाखे।  
 "तेजराम" चौड़े दाखै, मन ज्यांरो जाग है ॥९॥

**अर्थ -** गृहस्थ जीवन में आने वाले उस बदलाव पर कटाक्ष है जहाँ व्यक्ति अपने माता-पिता की तुलना में ससुराल पक्ष को अधिक महत्व देने लगता है। वह अपने सालों (पत्नी के भाइयों) को तो आगे रखता है (उनका बहुत सम्मान और आवभगत करता है), लेकिन अपनी सगी बहनों को पीछे धकेल देता है (उनकी उपेक्षा करता है)। वह बार-बार अपनी सालियों की सेवा और खातिरदारी में लगा रहता है, क्योंकि उसे अपनी साली बहुत प्रिय लगती है। ससुराल वालों का कोई भी काम हो तो वह दौड़-दौड़ कर करता है, जबकि अपने बूढ़े माता-पिता से मुँह मोड़ लेता है (उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता)। वह हर समय अपनी पत्नी के पास ही बैठा रहता है; उसके मन से बड़ों की मर्यादा, लोक-लाज और शर्म पूरी तरह खत्म हो गई है। वह पूरी तरह निर्लज्ज (निःशंक) हो गया है और अपना तन-मन-धन सब कुछ ससुराल और पत्नी के मोह में न्योछावर (वार दयो) कर चुका है। जहाँ कहीं भी मेला या उत्सव होता है, वहाँ वह पत्नी को लेकर तुरंत पहुँच जाता है; यह सब उसके भीतर की आसक्ति और काम-मोह (नारी केरी आग) का प्रभाव है। वह अपनी पत्नी को तो हथेली के छाले की तरह (बहुत नाजुक समझकर) सहेज कर रखता है, जबकि अपनी माँ को घर के काम करने के लिए कहता है। सन्त तेजराम जी स्पष्ट रूप से (चौड़े) यह सत्य कहते हैं कि जिनका विवेक या मन जागृत है, वे इस कड़वी सच्चाई को बखूबी देख और समझ सकते हैं।

॥कवित्त॥

जोवन तीस को लाल, घणेरा बजावे गाल।  
 माता पिता भयो साल, गाल्यां भूँडी बोले है ॥  
 पेट में राख्यो है म्हने, भाड़ो देऊं राजी हूनें।  
 आछी तरे जाणू थाने, एतो थांरो तोल है ॥  
 धन तो बेंचाय लेऊं, थाने अबे नहीं सेऊं।  
 लारे आई जिण ने देऊं, उण्णे म्हारे कौल है ॥  
 माता कहै म्हारो बेटो जासूं तो बांध्यो है खेटो।



**"तेज" कहै देखो बेटो नारी केरो गोल है ॥१०॥**

**अर्थ - युवावस्था के अहंकार और माता-पिता के प्रति संतान की कृतघ्नता (उपकार न मानना) का बहुत ही तीखा चित्रण है।** जब बेटा तीस वर्ष की भरपूर युवावस्था में आता है, तो वह बहुत बड़ी-बड़ी बातें (गाल बजाना/डींगें मारना) करने लगता है और अहंकार से भर जाता है। अब उसे अपने ही माता-पिता कांटे (साल) की तरह चुभने लगते हैं और वह उनके साथ अभद्र व्यवहार करते हुए उन्हें बुरी-बुरी गालियाँ तक देता है। वह अपनी माँ से कुतर्क करता है कि "यदि तुमने मुझे नौ महीने पेट में रखा है, तो बताओ उसका कितना किराया (भाड़ा) हुआ? मैं वह चुकाने को तैयार हूँ, बस तुम खुश रहो (पर मुझसे दूर रहो)।" वह कहता है कि मैं तुम्हारी असलियत अच्छी तरह जानता हूँ, तुम्हारी बस इतनी ही कीमत (तोल) है कि मैं तुम्हें पैसे दे दूँ। वह आगे कहता है कि मैं घर-संपत्ति (धन) बेचकर अपना हिस्सा ले लूँगा, लेकिन अब तुम्हारी सेवा या तुम्हें बर्दाश्त (सेऊँ) नहीं करूँगा। मेरे साथ जो विवाह कर आई है (पत्नी), अब मैं सब कुछ उसे ही दूँगा क्योंकि मैंने उसे वचन (कौल) दिया है। बेचारे माता-पिता अभी भी उसे अपना ही बेटा कहते हैं, जिससे उन्होंने कभी बड़ी उम्मीदें और मोह (खेटो/स्नेह) बाँधा था। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि देखो, यह बेटा अब पूरी तरह अपनी पत्नी के प्रभाव (गोल/घेरे) में है और उसी के इशारों पर नाच रहा है।

**॥कवित्त॥**

माता पिता तोड़ बैठो काम क्रोध मांहि पैठो ।  
नारी तो कियो है सेंठो चसको न खाय है ॥  
इन्द्रियाँ आधीन भयो राम जी ने भूल गयो ।  
मोह माया भूल रह्यो कुबद उपाय है ॥  
बेटा बेटी देख देख, मन में फूल्यो है सेख ।  
आपरा बखाणे लेख दोड़्यो एक धाय है ॥  
राम जी सूं नुगरो होय, माता पिता गुण खोय ।  
"तेजराम" कहै जोय, जोबन की लाय है ॥११॥

**अर्थ - युवावस्था के अहंकार और मोह-माया में फंसे मनुष्य की स्थिति का वर्णन किया गया है।** मनुष्य जवानी के जोश में अपने माता-पिता से संबंध तोड़ लेता है (उनकी उपेक्षा करता है) और काम (वासना) तथा क्रोध के विकारों में डूब जाता है। वह अपनी पत्नी (नारी) के मोह में ऐसा बंध जाता है कि उसी को अपना सब कुछ मान लेता है, और उसे संसार की किसी और बात का स्वाद या सुध नहीं रहती। वह अपनी इंद्रियों के वश में हो गया है और उस ईश्वर (राम जी) को पूरी तरह भूल गया है जिसने उसे यह जीवन दिया। वह संसार की

मोह-माया के जाल में इस तरह उलझ गया है कि अब वह केवल कुबुद्धि (गलत रास्ते) और सांसारिक लाभ के उपायों में ही लगा रहता है। अपने भरे-पूरे परिवार और बेटा-बेटी को देखकर वह मन ही मन बहुत अभिमानी (शेखी बघारने वाला) हो जाता है और अत्यंत प्रसन्न होता है। वह केवल अपने ही भाग्य और अपनी उपलब्धियों का बखान करता रहता है और सांसारिक सुखों को पाने के लिए पागलों की तरह एक ही दिशा में दौड़ रहा है। वह ईश्वर के प्रति कृतघ्न (नुगरो) हो गया है और अपने माता-पिता के उपकारों व संस्कारों को भी भुला चुका है। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि यह सब 'जवानी की आग' (जोबन की लाय) के कारण है, जिसमें अंधा होकर मनुष्य धर्म और कर्तव्य को भूल जाता है।

॥कवित्त॥

जवानी कीयो है गेलो, सुणे नहीं मारे हेलो ।  
छाया ने निरखे छैलो, डोडी पाग जोर है ॥  
पट्टारो गिड़दो भारी, मुख में तमाखू डारी ।  
आँखों में सुरमो सारी भांगे केरो तोर है ॥  
अमल होका सूं प्यार, गांजा हंदो नसो त्यार ।  
जूवा रमे दश च्यार सांज नहीं भोर है ॥  
तेज कहै देखो जवानी भिष्ट कीया कानी कानी ।  
गुरां बिना भई हानी राम जी रो चोर है ॥१२॥

**अर्थ -युवावस्था (जवानी) में पथभ्रष्ट हुए व्यक्ति के व्यवहार और उसके दुष्परिणामों का चित्रण है।** जवानी ने मनुष्य को पागल (गेलो) बना दिया है, वह मदमस्त है और अब वह किसी की पुकार (हेलो) या सीख नहीं सुनता। वह 'छैला' (बाँका युवक) अपनी ही परछाई देख-देखकर इतराता है और अपनी पगड़ी को टेढ़ी (तिरछी) बांधकर रौब दिखाता है। उसके लंबे बालों (पट्टों) का घेरा बहुत भारी और बढ़ा हुआ है, और उसने अपने मुँह में तंबाकू दबा रखी है। आँखों में उसने सूरमा (काजल) लगा रखा है और उसकी आँखों में भांग का नशा साफ झलकता है। उसे अफीम (अमल) और हुक्के से गहरा प्रेम है, और हर समय वह गांजे के नशे में धुत रहता है। वह दसों दिशाओं में (या कई लोगों के साथ) जुआ खेलता रहता है; उसे न शाम का पता रहता है और न ही सुबह का। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि देखो, इस जवानी ने उसे पूरी तरह भ्रष्ट (भिष्ट) कर दिया है और वह मर्यादाओं से विमुख होकर इधर-उधर भटक रहा है। गुरु के ज्ञान और मार्गदर्शन के बिना उसका भारी नुकसान हुआ है। ऐसा व्यक्ति सत्कर्मों से दूर होकर ईश्वर की नजरों में गुनहगार (राम जी रो चोर) बन गया है।

॥कवित्त॥

जवानी में भयो अंध, भगति सूं मोड्यो कंध ।  
 म्हारे घणा भाई बन्ध, नारी पुत्र मोकला ॥  
 धन है अपार म्हारे, नहीं हूं किणी रे सारे ।  
 सारा लोग फिरे लारे कमाऊ मैं एकला ॥  
 हवेली है म्हारे जेड़ी, किणी रे नहीं है ऐड़ी ।  
 माया मद बैठो पेड़ो, दूजा जाणे ढोकला ॥  
 गर्ब मत कर प्राणी रावण घणेरी ताणी ।  
 "तेज" कहै भई हाणि पीछे होसी खोखला ॥१३॥

**अर्थ -मनुष्य के अहंकार (घमंड) और माया के मोह का चित्रण है। कैसे धन और परिवार के मद में व्यक्ति सत्य को भूल जाता है।** युवावस्था के जोश और शक्ति में मनुष्य अंधा हो गया है और उसने भक्ति (ईश्वर) की ओर से अपना कंधा मोड़ लिया है, यानी वह धर्म-कर्म से विमुख हो गया है। वह अभिमान में कहता है कि मेरे बहुत सारे भाई-बन्धु हैं और मेरे पास स्त्री तथा पुत्रों की कोई कमी नहीं है (सब संपन्न हैं)। मेरे पास अपार धन-दौलत है और मुझे किसी के सहारे या मदद की कोई जरूरत नहीं है। दुनिया के लोग मेरे पीछे-पीछे घूमते हैं क्योंकि मैं अकेला ही इतना समर्थ और कमाने वाला हूँ। जैसी विशाल हवेली (मकान) मेरी है, वैसी शानदार हवेली किसी और के पास नहीं है। वह माया (धन) के नशे में ऐसा चूर होकर बैठा है कि वह दूसरे लोगों को तुच्छ (ढोकला या साधारण) समझता है और खुद को सर्वश्रेष्ठ। सन्त चेतावनी देते हुए कहते हैं कि हे प्राणी! इतना घमंड मत कर, रावण ने भी बहुत शक्ति प्रदर्शन किया था और बहुत अहंकार ताना था (पर उसका भी अंत हुआ)। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि इस अहंकार के कारण तेरा भारी नुकसान (आत्मिक पतन) हो रहा है और अंत में तू अंदर से बिल्कुल खाली और खोखला रह जाएगा।

॥कवित्त॥

धन रु जोवन काचो, देख देख मति नाचो ।  
 आन देव कांई जाचो, आडा नहीं आवसी ॥  
 बादल की छाया देख, ओस केरो मोती पेख ।  
 सीत कोट जैसी सेक, नदी ज्यूं तो जावसी ॥  
 गर्भ में बचाय लीयो, मिनख जनम दीयो ।  
 धिक हेरे थारो जीयो, राम नहीं गावसी ॥  
 अब के औसर चूको, पड़या थे रोही में कूको ।  
 "तेज" कहै बोर सूखो, कड़ कड़ खावसी ॥१४॥

**अर्थ -धन, जवानी और मानव जीवन की नश्वरता (क्षणभंगुरता) का वर्णन है। संसार की सुख-सुविधाएं स्थायी नहीं हैं।** धन-दौलत और जवानी 'कांच' के समान कच्ची (अस्थायी) है, इसे पाकर अहंकार में मत नाचो (घमंड मत करो)। अन्य सांसारिक देवी-देवताओं या शक्तियों से क्या याचना करना? अंत समय में इनमें से कोई भी तुम्हारे आड़े (बचाव के लिए) नहीं आएगा। जवानी और धन बादल की छाया के समान हैं जो तुरंत निकल जाती है, और ओस की बूंदों (मोती) की तरह हैं जो सूरज निकलते ही गायब हो जाती हैं। यह जीवन रेत के कोट (दीवार) की गर्मी जैसा है और नदी के प्रवाह की तरह बहता जा रहा है, इसे रुकना नहीं है। परमात्मा ने तुम्हें माता के गर्भ की कठिन परिस्थितियों में बचाकर रखा और यह अनमोल मनुष्य (मिनख) जन्म दिया। धिक्कार है तुम्हारे ऐसे जीवन पर, यदि तुम इस जन्म को पाकर भी राम (ईश्वर) का नाम नहीं गाते या उनका स्मरण नहीं करते। यदि इस बार यह अवसर (मनुष्य जन्म) चूक गए, तो फिर निर्जन वन (रोही) में अकेले बैठकर रोने या पुकारने से कुछ नहीं होगा। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि तब समय बीत जाने पर तुम्हें सूखे बेर (कठिनाइयाँ) चबाने पड़ेंगे, यानी बुढ़ापे और मृत्यु के समय तुम्हें केवल पछतावा और कष्ट ही झेलने पड़ेंगे।

॥कवित्त॥

संत उपदेश देत, जाय दिन वेगो चेत ।  
 स्वास तूं गिणवा लेत, आज काल जावसी ॥  
 दिन में हजार बार, काल फिरे थारी लार ।  
 नींद केरी पासी डार, ऐसे तोहि खावसी ॥  
 काल तो दरेड़ो देसी, संग तूं तो कांई लेसी ।  
 पीछे हाय हाय केसी, दुःख घणो पावसी ॥  
 जोवन की वार तार, जिण में क्यूं बांधे भार ।  
 "तेज" कहै नदी धार, मध कांई लावसी ॥१५॥

**अर्थ -समय की गति और मृत्यु (काल) की अनिवार्यता के प्रति सचेत करने का वर्णन है।** संत महात्मा उपदेश दे रहे हैं कि समय तेजी से बीता जा रहा है, इसलिए हे मनुष्य! तू जल्दी सचेत (जागरूक) हो जा। तेरी साँसें गिनी-चुनी हैं और तू उन्हें एक-एक कर खर्च कर रहा है; आज नहीं तो कल, यह जीवन समाप्त हो ही जाएगा। मृत्यु (काल) दिन में हजारों बार तेरे पीछे-पीछे घूमती है, वह हर पल तेरे अंत की ताक में है। जैसे शिकारी जाल डालता है, वैसे ही काल तुझे मोह-माया की नींद में सोया हुआ पाकर (झपट्टा मारकर) अपना ग्रास बना लेगा। जब काल तुझ पर हमला (दरेड़ो) करेगा, तब तू अपने साथ यहाँ से क्या ले जा पाएगा?

(अर्थात् कुछ भी साथ नहीं जाएगा)। अंत समय में तू केवल 'हाय-हाय' कहकर पछताएगा और तुझे बहुत मानसिक व शारीरिक कष्ट भोगना पड़ेगा। यह जवानी तो बहते पानी की धार की तरह क्षणिक है, फिर तू इसमें व्यर्थ के पापों और मोह का बोझ क्यों बांध रहा है? सन्त तेजराम जी कहते हैं कि जीवन नदी की उस धारा के समान है जो तेजी से बह रही है; इसमें तू अहंकार (मद) क्यों कर रहा है? वह तुझे कहीं का नहीं छोड़ेगा।

॥कवित्त॥

चेत नर आज काल, जिते है जोवन बाल ।  
 पीछे होसी घणा क्वाल, आख्यां गीड़ आवसी ॥  
 हाथ पग धूजे थारा, जुरा दोली फिरे बारा ।  
 घरका रा ने तूं लागे खारा, पाणी नहीं पावसी ॥  
 धन तो बेचाय लेवे, टूटोड़ो मांचल्यो देवे ।  
 पड़ियो बारोड़ी सेवे, जोर कांई लावसी ॥  
 कोई नहीं दीसे थारो करे नित म्हारो म्हारो ।  
 "तेज" कहै जग खारो पीछे पछतावसी ॥१६॥

**अर्थ -बुढ़ापे की लाचारी और जीवन की कड़वी सच्चाई का वर्णन है। मनुष्य को सचेत कर रहे हैं कि समय रहते संभल जाओ, वरना अंत समय बहुत कष्टकारी होगा।** हे मनुष्य ! आज और अभी सचेत हो जा, जब तक तुझमें जवानी का जोश और शक्ति (बाल) शेष है। बाद में तू बहुत बेहाल (व्याकुल) होगा, शरीर शिथिल हो जाएगा और आँखों से कीचड़ (गीड़) बहने लगेगा, यानी शरीर जर्जर हो जाएगा। बुढ़ापे में तेरे हाथ-पांव कांपने लगेंगे और बुढ़ापा (जुरा) तेरे द्वार पर दस्तक देने लगेगा, जिससे तू लाचार हो जाएगा। जब तू अशक्त हो जाएगा, तो घर के लोगों को भी तू बुरा (खारा) लगने लगेगा। स्थिति यहाँ तक आ सकती है कि तुझे समय पर पानी पूछने वाला भी कोई नहीं होगा। तेरे पास जो भी धन-दौलत होगी, उसे घरवाले हड़प लेंगे या ले लेंगे, और तुझे सोने के लिए एक टूटी हुई खाट (मांचल्यो) थमा देंगे। तुझे घर के किसी कोने या बाहर (बारोड़ी) डाल दिया जाएगा, जहाँ तू केवल पड़ा रहेगा। तब तेरी किसी बात पर कोई ज़ोर या अधिकार नहीं चलेगा। तू जिसे रोज 'मेरा-मेरा' कहता फिरता है (परिवार, संपत्ति), अंत में उनमें से कोई भी तेरा अपना नज़र नहीं आएगा। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि यह संसार बहुत मतलबी और खारा (निर्मोही) है। अगर समय रहते भक्ति और सत्कर्म नहीं किए, तो अंत में केवल पछतावा ही हाथ लगेगा।

॥कवित्त॥

माया जवानी चार दिन, लोभ करे छिन छिन ।  
 घेटो बांध्यो जिन जिन, जश नहीं लीन है ॥  
 धर्म री तो मेटे सीर, पैरे ओढे चंगा चीर ।  
 लाडू पेड़ा जीमे खीर, यासूं तन्न पीन है ॥  
 चुगल चोरटो मन परत्रिया देवे तन ।  
 अलेखे लगावे धन, धींगा आगे दीन है ॥  
 संत देख करे हासी पाप री तो गूंथे पासी ।  
 "तेज" कहै काल खासी, नेनो तन छीन है ॥१७॥

**अर्थ - लोभ, विलासिता और अनैतिक जीवन जीने वाले व्यक्ति के पतन का वर्णन है। संत समझा रहे हैं कि सांसारिक सुखों में डूबा व्यक्ति अंततः कैसे कष्ट पाता है।** धन-संपत्ति (माया) और जवानी केवल चार दिन की (अल्पकालिक) है, फिर भी मनुष्य हर पल (छिन-छिन) लोभ और लालच में डूबा रहता है। जिन-जिन लोगों ने केवल अपने स्वार्थ की गांठ बांधी (सिर्फ संग्रह किया), उन्होंने संसार में कभी यश या सम्मान प्राप्त नहीं किया। वह व्यक्ति धर्म की मर्यादाओं और सीमाओं (सीर) को मिटा देता है और केवल अच्छे वस्त्र (चीर) पहनने और दिखावे में मग्न रहता है। वह लड्डू, पेड़े और खीर जैसे पकवान खाकर अपने शरीर (तन्न) को तो पुष्ट (पीन/मोटा) कर लेता है, लेकिन आत्मा को भूल जाता है। उसका मन चुगली करने और चोरी की नीयत रखने वाला हो जाता है, और वह पराई स्त्री (परत्रिया) के मोह में अपना शरीर और चरित्र गँवा देता है। वह अपने धन को गलत और अनगिनत (अलेखे) व्यसनों में लुटाता है, और ताकतवर (धींगा) लोगों के सामने वह दीन-हीन बनकर झुकता है। वह संतों और ज्ञानी लोगों को देखकर उनका उपहास (हासी) उड़ाता है और अपने कर्मों से स्वयं के लिए पाप का जाल (पासी) बुनता रहता है। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि अंत में काल (मृत्यु) उसे अपना ग्रास बना लेगी और तब उसका यह पुष्ट शरीर अत्यंत दुर्बल (छीन) और असहाय हो जाएगा।

॥कवित्त॥

अबे तो जवानी गई, संत सीख मानी नहीं ।  
 वरष तो साठ भई माथो धोलो पीर है ॥  
 धन तो बैचाय लीयो, डेरो तो वारोड़ी कीयो ।  
 गाबलिया हाथांई सीयो फाटा लीरा लीर है ॥  
 हाथ पग माथो धूजे, आँख्यां सूं धुंधलो सूजे ।  
 अबे सुख कुण बूझै, घरा जीमे खीर है ॥

राबड़ी रा पड्या वांदा, संतां आगू कह्यो आंधा ।

"तेज" कहै काढे कांदा, ऐसो जग सीर है ॥१८॥

अर्थ - वृद्धावस्था में समय न सँभालने के कारण उत्पन्न लाचारी का मार्मिक चित्रण है, जवानी के अंत और संतों की अनदेखी के बाद जीवन के संघर्षपूर्ण पड़ाव को रेखांकित किया है। इसमें शरीर के जीर्ण-शीर्ण होने, धन के अभाव और सांसारिक स्वार्थ के कारण परिवार द्वारा उपेक्षित किए जाने की पीड़ा को दर्शाया गया है। जवानी बीत चुकी है और संतों की सीख नहीं मानी गई। उम्र साठ हो गई, बाल सफेद हो गए और शरीर रोगों का घर बन गया। कमाया हुआ धन नष्ट हो गया और रहने का स्थान कूड़े-कचरे के ढेर सा हो गया। फटे कपड़ों को खुद सीना पड़ रहा है और वे चिथड़े हो गए हैं। हाथ, पैर और सिर कांपने लगे हैं और आँखों से धुंधला दिखाई दे रहा है। सुख की चिंता कौन करे, घर में लोग खीर खा रहे हैं और यहाँ हाल खराब है। अब राबड़ी भी नसीब नहीं, संतों की बात न मानकर जो अंधे बने थे। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि अब संसार (घर) प्याज की तरह बाहर निकाल रहा है, यही जगत की सच्चाई है।

॥कवित्त॥

बेटा बहू भूँडा बोले, डाकी ज्यूं तो काँई डोले ।

पड़यो रे पोल रे ओले, काँई थारे काम है ॥

मन में निरांत नांही पड्यो आंख काढे काँई ।

म्हे तो छाछ घाट खाई, काँई बूझे नाम है ॥

छाती में धमीड़ा लेवे, गाल्यां रा बटीड़ा देवे ।

भार ज्या छोरांने सेवे, थारा दिया डाम है ॥

"तेज" कहै भई खवारी नारी ने तो कैतो म्हारी।

देख लो जगत यारी, थाकां पछे राम है ॥१९॥

अर्थ - वृद्धावस्था में परिवार के भीतर होने वाले तिरस्कार और कड़वे अनुभवों का वर्णन है। इसमें दिखाया गया है कि जिस परिवार के लिए व्यक्ति जीवन भर संघर्ष करता है, अंत में वही उसे बोझ समझने लगता है। बेटा और बहू अब बुरा-भला बोलते हैं और टोकते हैं कि तू किसी 'डाकी' (भूत या लालची व्यक्ति) की तरह यहाँ-वहाँ क्यों डोलता रहता है? वे कहते हैं कि घर की पोल (ओट या ड्योढ़ी) में चुपचाप पड़ा रह, अब तुझे दुनियादारी के कामों से क्या लेना-देना है? मन में कोई शांति या संतोष नहीं है, और जब तू (वृद्ध) क्रोध में आँखें निकालता है, तो उन्हें बुरा लगता है। वे ताना मारते हैं कि हमने तो छाछ-राबड़ी खाकर गुजारा किया है, अब तेरा नाम पूछने या तुझे सम्मान देने की क्या



जरूरत है? उनकी बातें छाती में धक्के (चोट) की तरह लगती हैं और वे गालियों के गट्टर (लगातार अपशब्द) सुनाते हैं। जिन बेटों को तूने बड़े लाड-प्यार से पाला, आज वे तुझे एक 'भार' (बोझ) की तरह ढो रहे हैं और तुझे ताने दे रहे हैं। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि अब बड़ी दुर्दशा (खवारी) हो रही है; जिस पत्नी को तू 'मेरी-मेरी' कहता था, वह भी अब साथ नहीं देती। संसार की इस स्वार्थी मित्रता को देख लो, अंत में केवल 'राम' का नाम ही सत्य है (बाकी सब मोह-माया है)।

॥कवित्त॥

जग है स्वारथी सारो, थाका पछे लागे खारो ।  
 मूंडो करे कालो थारो, फाटो देदे गूदड़ो ॥  
 रोजीना काढे है गारी, छाती नित्त भूजे म्हारी ।  
 ऐसे बोले नारी प्यारी, हाथ रो है सुमड़ो ॥  
 कद ओ मरेला डाकी, रह्या दिन केता बाकी ।  
 हीड़ा हूँ तो कर थाकी, जीयो म्हारो लूमड़ो ॥  
 तिसाँ मरूँ पावो पाणी, हेला करे कानी कानी ।  
 "तेज" कहै भई हानी, मोह माया डूबड़ो ॥२०॥

**अर्थ -संसार और परिवार के स्वार्थ का चरमोत्कर्ष दिखाता है, जहाँ मृत्यु की प्रतीक्षा की जा रही है और वृद्ध व्यक्ति को अत्यंत तिरस्कार झेलना पड़ रहा है।** यह पूरा संसार स्वार्थी है, मतलब निकल जाने के बाद तुम सबको खारे (बुरे) लगाने लगते हो। वे तुम्हारा अपमान करते हैं (मुँह काला करना) और ओढ़ने के लिए फटा-पुराना गूदड़ा (फटे कपड़ों का बिस्तर) दे देते हैं। वे रोज गालियाँ देते हैं, जिससे मेरी छाती हर समय जलती (दुखती) रहती है। जिसे कभी 'प्यारी पत्नी' कहा था, वह भी अब ऐसे बोलती है जैसे हाथ में डंडा (सुमड़ो) लेकर मारने को तैयार हो। घरवाले अब खुलेआम पूछते हैं कि यह 'डाकी' (बूढ़ा) कब मरेगा? इसके जीवन के कितने दिन और बाकी रह गए हैं? मैं तो इसकी सेवा और देखभाल करते-करते थक गई हूँ, मेरा तो जी (हृदय) ही जलने लगा है। प्यास से गला सूखता है और पानी मांगता हूँ, तो वे अनसुना कर देते हैं या इधर-उधर (कानी-कानी) बहाने बनाते हैं। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि मोह-माया में डूबने के कारण जीवन की भारी हानि हुई है, क्योंकि अंत समय में कोई साथ देने वाला नहीं है।

॥कवित्त॥

बुढापे री बेस पासी, घणे री चाले हैं खांसी ।  
 छोरा तो करे है हाँसी, दुख घणो होवे है ॥  
 आंख्यां सू तो सूझे नहीं, कानां रे तो डाटा थई ।



देखो अबे घणी भई माथो कूट रोवे है ॥  
 खाट में तो झाड़े जावे, जूं वां तो घणे री खावे ।  
 गाडर ज्यू गिरणावे, अबे कुण धोवे है ॥  
 बूढ लो तो हाका करे, पाड़ोसयां सूं घर्मा डरे ।  
 "तेज" कहै ऐसो लड़े म्हारी शर्म खोवे है ॥२१॥

**अर्थ -बुढ़ापे की शारीरिक लाचारी और परिवार द्वारा की जाने वाली उपेक्षा का बहुत ही मार्मिक वर्णन है।** बुढ़ापे की स्थिति बहुत खराब (बेबस) हो गई है और शरीर कमजोर होने के कारण लगातार तेज खांसी चलती रहती है। बुजुर्ग की ऐसी हालत देखकर) बेटे उनका मजाक उड़ाते हैं और उनकी हंसी उड़ाते हैं, जिससे वृद्ध व्यक्ति को मन में बहुत दुख होता है। आंखों से अब कुछ दिखाई नहीं देता (धुंधला गया है) और कानों में जैसे 'डाटा' (डाट या रुई) लग गया हो, यानी सुनाई देना भी बंद हो गया है। देखो अब तो हद हो गई है, वह अपनी इस बेबसी पर अपना सिर पीट-पीटकर रोता है। शरीर इतना लाचार है कि वे बिस्तर (खाट) पर ही गंदगी कर देते हैं और शरीर की सफाई न होने के कारण बहुत सारी जुएं उन्हें काटती/खाती रहती हैं। वे भेड़ (गाडर) की तरह मिमियाते या आवाजें निकालते रहते हैं, और घरवाले सोचते हैं कि अब इन्हें (इनकी गंदगी को) कौन साफ करे या धोए। बूढ़ा व्यक्ति मदद के लिए जोर-जोर से आवाजें (हाका) लगाता है, जिसे सुनकर घरवाले डरते हैं कि कहीं पड़ोसियों को घर के हालातों का पता न चल जाए। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि घरवाले (बेटे) कहते हैं कि यह बुढ़ा तो ऐसे लड़ता/चिल्लाता है जैसे हमारी सारी इज्जत (शर्म) ही मिट्टी में मिला देगा।

॥कवित्त॥

हाका करे एक धाय, जीभ तो थाकती जाय ।  
 भेला हुवा सारा आय, घड़ी पोर काढसी ॥  
 यमदूत फिरया लार, गला में तो फांसी डार ।  
 मुगदरां दीनी मार, मोह नहीं छाड़सी ॥  
 हाथां सूं तो करे झालो, कोई रे जमाने पालो ।  
 देख देख रोवे कालो, देवे कुण आडसी ॥  
 मारकूट लीनो आगे, कोई नहीं चाल्यो सागे ।  
 "तेज" कहै देर लागे, काठ घोड़ी चाढसी ॥२२॥

**अर्थ -मृत्यु के समय की स्थिति और जीवन के अंतिम क्षणों का चित्रण करता है, जहाँ जीव संसार के मोह और यमदूतों के भय के बीच फंसा होता है।** मृत्यु निकट देखकर व्यक्ति (या उसके परिजन) जोर-जोर से पुकारते या विलाप करते हैं, और चिल्लाते-चिल्लाते

अब जीभ भी थकने लगी है (आवाज साथ छोड़ रही है)। सारे सगे-संबंधी और मोहल्ले वाले आकर इकट्ठे हो गए हैं और आपस में चर्चा कर रहे हैं कि अब यह बस घड़ी-दो घड़ी (कुछ ही समय) का मेहमान है। यमदूत पीछे लग गए हैं और उन्होंने गले में (प्राण हरने के लिए) यमपाश या फांसी डाल दी है। यमदूत उसे चोट पहुँचा रहे हैं (मृत्यु का कष्ट), फिर भी जीव का इस संसार से मोह नहीं छूट रहा है। वह लाचारी में हाथों से इशारे (झाला) करता है कि कोई उसे बचा ले, पर इस समय कोई भी उसका साथ निभाने वाला या उसे पालने वाला नहीं है। उसकी अंत समय की पीड़ा देखकर 'काल' (मृत्यु) भी जैसे मुस्कुरा रहा है या डरा रहा है, और अब उसे बचाने के लिए कोई भी आड़ (सहारा) नहीं दे रहा। यमदूत उसे अपने वश में करके आगे ले चले हैं, और कोई भी सगा-संबंधी उसके साथ (परलोक की यात्रा पर) नहीं चल रहा है। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि अब देर नहीं लगेगी, जल्दी ही इसे 'काठ की घोड़ी' यानी अर्थी (बैकुंठ) पर चढ़ा दिया जाएगा।

॥कवित्त॥

च्यार जणां खांदे लियो, बारोडो तो आछो कीयो ।  
मन में तो ठाडो हीयो, खांडी हांडी लार रे ॥  
लकडां रो गाडो लेय, जंगल जलाय देय ।  
देखलो जगत नेह, ऊपर भाटा डार रे ॥  
न्हाय धोय आया पाछा, तिलक तो कीया आछा ।  
मूंग तो भिजोया छाछा, डेरो बैठो बार रे ॥  
तीयो तो आछेरो कीयो, पुन्न पेट्यो नांहि दीयो ।  
"तेज" कहै काह लीयो, गयो बहती धार रे ॥२३॥

अर्थ -मृत्यु के बाद के अंतिम संस्कार और दुनिया के दिखावे पर करारा व्यंग्य है, जीवन भर का मोह मृत्यु के चंद घंटों में ही समाप्त हो जाता है। अंतिम संस्कार के बाद की रस्में और सांसारिक दिखावा यहाँ मुख्य रूप से बताया गया है, जिसके अनुसार व्यक्ति खाली हाथ ही संसार से विदा होता है। चार लोगों द्वारा अर्थी को कंधे पर उठाकर श्मशान ले जाने की तैयारी बहुत अच्छे से की गई। परिजनों ने मन कठोर करके, हाथ में मटकी और डंडा लेकर शव के पीछे प्रस्थान किया। लकड़ियों की चिता बनाकर शरीर को अग्नि के हवाले कर दिया गया। प्रेम का दिखावा देखो—शरीर के जलने के बाद उसके अवशेषों पर पत्थर डाल दिए गए। संस्कार के बाद सबने नहा-धोकर और तिलक लगाकर शुद्धि कर ली। मृतक के पीछे मूंग और छाछ का प्रबंध हुआ, और लोग बाहर डेरा डाले बैठे रहे। तीसरे दिन की रस्म तो अच्छे से हुई, पर सच्चा दान-पुण्य नहीं

किया गया। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि सब कुछ समय की धारा में बह गया और जीव ने कुछ भी साथ नहीं लिया।

॥कवित्त॥

नारी कूका आंछे करे, मूर्च्छा आय हेटी पड़े ।  
आज म्हारो हीयो जरे, पीव छोड़ गया रे ॥  
मुख देख रोटी खाती, पीहर कदे न जाती ।  
तेल बिना भई बाती, ऐसा दुःख भया रे ॥  
मारगुरी आग दाई, मेलग्या एकली सांई ।  
मरूं अबे विष खाई, कुण करे दया रे ॥  
पाछा आवो अच्छा सेवूं मिसरी रा मौवण देवूं ।  
"तेज" कहै झूठा नेहू, कूड़ा कथ कह्या रे ॥२४॥

**अर्थ -पति की मृत्यु के बाद पत्नी के विलाप और उस विलाप में छिपे 'दिखावे' या सांसारिक मोह पर कटाक्ष है।** स्त्री जोर-जोर से विलाप (कूका) कर रही है और बार-बार बेहोश होकर जमीन पर गिर रही है। वह रोते हुए कह रही है कि आज मेरा हृदय (हीयो) जल रहा है क्योंकि मेरे प्रियतम (पति) मुझे अकेला छोड़कर चले गए हैं। वह अपनी वफादारी जताते हुए कहती है कि मैं तो पति का मुख देखकर ही भोजन करती थी और उन्हें छोड़कर कभी अपने मायके (पीहर) भी नहीं जाती थी। जैसे तेल के बिना दीये की बाती बुझ जाती है, मेरी स्थिति भी वैसी ही हो गई है; मुझ पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। हे स्वामी! आप मुझे विरह की अग्नि में जलने के लिए अकेला छोड़ गए, यह वियोग मुझे मार डालेगा। अब मैं जहर (विष) खाकर मर जाऊंगी, क्योंकि अब मुझ पर दया करने वाला और मेरा ध्यान रखने वाला कोई नहीं बचा। वह विलाप में कहती है—हे स्वामी! एक बार वापस आ जाओ, मैं आपकी बहुत सेवा करूंगी और आपको मिश्री जैसे मीठे पकवान खिलाऊंगी। सन्त तेजराम जी अंत में वास्तविकता बताते हुए कहते हैं कि यह सब 'झूठा प्रेम' (नेहू) है और ये विलाप की बातें केवल कहने मात्र (कूड़ा कथ) हैं, क्योंकि जाने वाला कभी वापस नहीं आता और जीवित लोग केवल औपचारिकता कर रहे हैं।

॥कवित्त॥

क्रिया तो करी है लारे, मोसर होवसी स्वारे ।  
न्यात गंगा जीमे द्वारे, ये तो जम डंड रे ॥  
पेला रो तो लेणों खाई, राजी व्हे ने दोनी भाई ।  
जीव तो अकेलो जाई, ऐसे जग भंड रे ॥  
पाप कीया इण साथे, जमां रे तो पड्यो हाथे ।

मुगदर पड़े माथे, करे देही खंड रे ॥  
 जीव घणो बिललावे, छोडावण कुण आवे ।  
 "तेजराम" कहा गावे, भूलो जग मंड रे ॥२५॥

**अर्थ** -यह छन्द संसार की नश्वरता और मृत्यु के बाद के कर्मफल पर आधारित है। संत तेजराम जी यहाँ चेतावनी दे रहे हैं कि मृत्यु के बाद कोई भी सांसारिक संबंधी साथ नहीं देता। मृत्यु के बाद पीछे रहने वाले लोग (परिजन) अंतिम संस्कार की क्रियाएँ करेंगे और अगले दिन सुबह ही 'मोसर' (मृत्यु भोज) की तैयारी में लग जाएँगे। समाज के लोग और रिश्तेदार गंगा किनारे या घर के द्वार पर मृत्यु भोज (जीमण) करेंगे, लेकिन यह सब उस जीव के लिए यमराज के दंड के समान है (क्योंकि ये क्रियाएँ जीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त नहीं करतीं)। जो पुराना लेना-देना (कर्ज या संपत्ति) था, उसे दोनों भाई आपस में बाँटकर प्रसन्न हो जाएँगे और उसे भोगेंगे। लेकिन वह जीव (आत्मा) इस संसार से अकेला ही प्रस्थान करेगा। यह संसार ऐसा ही 'भंड' (छल-कपट या दिखावे से भरा) है। जीवन भर जिन लोगों के लिए मनुष्य ने पाप किए, वे तो पीछे रह गए और अब वह जीव स्वयं यमदूतों (जमां) के हाथों में पड़ गया है। यमदूत उसके सिर पर भारी मुगदर (गदा) मारते हैं, जिससे उसके सूक्ष्म शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं (अत्यंत कष्ट का वर्णन)। वहाँ जीव दुःख के मारे बहुत विलाप करता है और गिड़गिड़ाता है, लेकिन उसे उन यमदूतों से छुड़ाने वाला वहाँ कोई नहीं आता। संत तेजराम जी कहते हैं कि मैं क्या गाकर समझाऊँ, हे जीव! तू इस संसार के आडंबरों और माया-जाल में पड़कर अपने असली लक्ष्य को भूल गया है।

॥कवित्त॥

आठ ठौड़ दुःख पावे, कष्ट नहीं कहा जावे ।  
 सह कांटा वेलू आवे, आगे खांडा धार रे ॥  
 जल आगे आयो भारी, अंधारी सघन झारी ।  
 आगे तो उबट रारी, तप्त जमीं त्यार रे ॥  
 वैतरणी नदी आगे, जीव तो कांपण लागे ।  
 जम्मां आगे कहां भागे, दीयो मांहि डार रे ॥  
 सेल तो पर्वत आयो, जम्मारि तो मन्न भायो ।  
 तेज कहै दुःख पायो, पड्यो दिखण द्वार रे ॥२६॥

**अर्थ** -यमलोक के मार्ग में जीव द्वारा सहे जाने वाले कष्टों का वर्णन है। इसमें वैतरणी नदी, तप्त जमीन, कांटों भरे मार्ग और यमदूतों के अत्याचारों का उल्लेख है, जो जीव के कर्मों का फल है। परलोक के मार्ग में जीव आठ विशिष्ट स्थानों पर भीषण कष्ट भोगता है, जिनका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मार्ग में असंख्य कांटे और गर्म रेत है, और

आगे का रास्ता तलवार की धार जितना तीखा है। आगे एक बड़ा जलक्षेत्र है और हर तरफ घना अंधेरा व घनी झाड़ियाँ हैं। आगे का रास्ता ऊबड़-खाबड़ और युद्ध जैसा भयानक है, जहाँ जमीन तवे की तरह तप रही है। भयानक वैतरणी नदी को देखकर जीव भय से कांपने लगता है। यमदूत जीव को पकड़कर उस वैतरणी नदी में डाल देते हैं। कांटों वाला पर्वत आता है, जिसे देखकर यमदूत खुश होते हैं और जीव को और पीड़ा पहुँचाते हैं। सन्त तेजराम जी के अनुसार, अपने कर्मों के कारण जीव ने अत्यंत दुःख पाया है और अब वह यमपुरी के दक्षिण द्वार पर पहुँचा है।

**विशेष – गरुड़ पुराण में यमलोक के मार्ग में आने वाले जिन "आठ ठौड़" (आठ स्थानों) का वर्णन किया गया है, वे वास्तव में वे पड़ाव या परिस्थितियाँ हैं जहाँ पापी जीव को भीषण यातनाएँ दी जाती हैं। पौराणिक संदर्भों के अनुसार, ये आठ कष्टकारी स्थान या अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं-**

**१-तप्त बालुका (गर्म रेत)-** वह स्थान जहाँ की जमीन धधकते कोयले या गर्म लोहे के समान तपती है, जिस पर जीव को नंगे पैर चलाया जाता है।

**२-असिपत्र वन (तलवारों के पत्तों वाला वन)-** एक ऐसा जंगल जहाँ पेड़ों के पत्ते तलवार की धार जैसे तेज होते हैं। हवा चलने पर ये पत्ते जीव के शरीर को खंड-खंड कर देते हैं।

**३-वैतरणी नदी-** रक्त, पीब और गंदगी से भरी भयानक नदी, जिसमें जहरीले जीव आत्मा को नोचते हैं।

**४-अंधकूप (अंधेरा गड्ढा)-** पूर्ण अंधकार से भरा वह स्थान जहाँ जीव को कुछ दिखाई नहीं देता और वह भय से कांपता रहता है।

**५-कांटेदार मार्ग-** वह रास्ता जहाँ सुई के समान तीखे कांटे बिछे होते हैं, जो जीव के सूक्ष्म शरीर को भेद देते हैं।

**६-खांडा धार (तलवार की धार)-** एक अत्यंत संकरा मार्ग जो तलवार की धार जैसा तीखा होता है, जिस पर संतुलन बिगड़ते ही जीव नीचे नरक की अग्नि में गिर जाता है।

**७-तप्त शिला-** तपते हुए विशाल पत्थर या पहाड़ जिन पर यमदूत पापियों को पटकते हैं।

**८-हिंसक जीव क्षेत्र-** वह स्थान जहाँ यमलोक के भयानक कुत्ते और सियार जीव को घेरकर कष्ट देते हैं।

**वैतरणी नदी-** इसका वर्णन मुख्य रूप से गरुड़ पुराण के 'प्रेत कल्प' में किया गया है। गरुड़ पुराण भगवान विष्णु और उनके वाहन गरुड़ के बीच का संवाद है, जिसमें मृत्यु के बाद की यात्रा और यमलोक का विस्तार से वर्णन है।

**स्वरूप-** यह नदी १००योजन (लगभग १२००किलोमीटर) चौड़ी है। इसमें सामान्य जल के स्थान पर रक्त, पीब (मवाद), कीचड़, और सड़ा हुआ मांस बहता है। इसकी गंध इतनी भयानक होती है कि जीव उसे सह नहीं पाता।

**भयावह जीव-** नदी के अंदर और किनारों पर सुई के समान मुख वाले कीड़े, विशाल मगरमच्छ, वज्र जैसी चोंच वाले गिद्ध, और अनेक हिंसक जलीय जीव निवास करते हैं जो पापियों को कष्ट देते हैं।

**पापियों के लिए अनुभव-** जब कोई पापी आत्मा इस नदी के पास पहुँचती है, तो इसका जल घी की तरह उबलने लगता है और आग की लपटें उठती हैं। पापी जीव इसमें गिरकर डूबते और उतराते हुए विलाप करते हैं।

**पुण्य आत्माओं के लिए-** जिन लोगों ने जीवन में धर्म और पुण्य के कार्य किए होते हैं, उनके लिए यह नदी शीतल जल के समान और सुखदायी हो जाती है।

**पार करने का उपाय-** गरुड़ पुराण के अनुसार, जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में गाय की सेवा की या गौदान (गाय का दान) किया हो या जिसके परिजनों ने उसके निमित्त विधिवत दान-पुण्य किया हो, वह गाय उस जीव को अपनी पूँछ के सहारे इस भयानक नदी से पार ले जाती है।

॥कवित्त॥

जमपुरी मार्ग केस, छियासी जोजन शेस ।  
 षट मास मांहि जेस, पीछे जमपुरी है ॥  
 चित्रगुप्त पोल्या, रात दिन लिखे ओल्या ।  
 छाने नहीं कछु भोल्या, खडूयो जीव दूरी है ॥  
 धर्मराज देखो भारी, न्याय तो नीसाण कारी ।  
 पापी कूं नरक डारी, पुण्य सुख पुरी है ॥  
 पाप इण भारी कीया, राम नाम नहीं लीया ।  
 "तेज" कहै नर्क दीया, अबे झकझूरी है ॥२७॥

**अर्थ -**यमलोक (जमपुरी) की दूरी, वहां के न्याय की प्रक्रिया और धर्मराज के दरबार का वर्णन है। सन्त तेजराम जी यहाँ कर्मों के हिसाब-किताब की गंभीरता को समझा रहे हैं। यमपुरी का मार्ग अत्यंत कठिन है, जो (पौराणिक मान्यता अनुसार) छियासी हजार योजन के विस्तार में फैला हुआ है। इस मार्ग को पार करने में जीव को लगभग छह महीने का समय लग जाता है, जिसके बाद अंत में यमपुरी आती है। वहाँ द्वार पर चित्रगुप्त स्थित हैं, जो दिन-रात मनुष्य के कर्मों का लेखा-जोखा (ओल्या/हिसाब) लिखते रहते हैं। हे भोले जीव!

वहां कुछ भी छिपा (छांने) नहीं रहता; जीव दूर खड़ा अपने कर्मों का हिसाब होते देखता है। वहाँ धर्मराज का स्वरूप अत्यंत प्रभावशाली और भारी है, जिनका न्याय अचूक और चोट करने वाला (निशानकारी) होता है। वे पाप करने वालों को सीधे नर्क में डाल देते हैं और पुण्य करने वालों को सुखों से भरी नगरी (स्वर्ग) भेजते हैं। जिसने जीवन भर केवल पाप के भारी काम किए और कभी भगवान (राम) का नाम नहीं लिया। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति को नर्क में डाल दिया गया है, जहाँ अब उसे पछतावे और पीड़ा में झकझोरा (कष्ट दिया) जा रहा है।

**विशेष-** यमपुरी के मार्ग और वहां की छियासी हजार योजन की दूरी का यह वर्णन मुख्य रूप से गरुड़ पुराण में मिलता है।

॥कवित्त॥

नर्क में तो दुःख पावे, कहतां चौकड़ी जावे ।  
 अन्त तो भी नहीं आवे, जन्म बहु मार है ॥  
 ताते तो थंबा सूं बाथ, पतंग ज्यूं जले गात ।  
 हाहाकार बिललात, बारे ना निसार है ॥  
 काग तो चूंचा री देत, जीभ सूदो चाम लेत ।  
 पाप केरो बायो खेत, दुःख भोग्यां पार है ॥  
 जग में तो किया सुख, अबे प्राणी मरे भूख ।  
 "तेज" कहै भारी दुःख, चौरासी में डार है ॥२८॥

**अर्थ -** नरक की भयानक यातनाओं और मनुष्य के पाप कर्मों के दुष्परिणामों का चित्रण है। यह स्पष्ट है कि संसार में पाप के बीज बोने से चौरासी लाख योनियों के भयानक दुखों का अंतहीन चक्र भोगना पड़ता है। नर्क के कष्ट इतने भयानक हैं कि उनके बारे में केवल सुनने या कहने मात्र से ही मनुष्य का विवेक काम करना बंद कर देता है, वह घबरा जाता है और उसके होश उड़ जाते हैं। उन दुखों का कभी अंत नहीं होता और जीव को बार-बार जन्म लेकर अनेकों प्रकार की शारीरिक और मानसिक मार सहनी पड़ती है। पापी जीव को आग की तरह तपते हुए खंभों से बाँध दिया जाता है, जिससे उसका शरीर वैसे ही जलता है जैसे आग पर पतंगा जल जाता है। वहाँ जीव दर्द के मारे हाहाकार करता है और जोर-जोर से बिलखता है, लेकिन उस कष्ट से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं मिलता। वहाँ कौवे (यमदूतों के प्रतीक) चोंच मार-मार कर कष्ट देते हैं और जीभ के साथ-साथ शरीर की खाल तक खींच लेते हैं। यह नरक का कष्ट और कुछ नहीं, बल्कि पापी द्वारा स्वयं बोया गया 'पाप का खेत' है; इसे पूरी तरह भोगे बिना इससे पार नहीं पाया जा



सकता। संसार में रहते हुए तो जीव ने केवल अपने सुखों और स्वार्थ की चिंता की, लेकिन अब वही प्राणी नरक की यातनाओं और भूख-प्यास से तड़प कर मर रहा है। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि यह बहुत भारी दुख है, जो जीव को चौरासी लाख योनियों के अंतहीन चक्र में डाल देता है।

**विशेष-** राजस्थानी और ब्रज भाषा की कहावतों में "चौकड़ी भूल जाना" एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है :- घबराकर रास्ता भूल जाना। बुद्धि का काम न करना। पूरी तरह से व्याकुल या सुध-बुध खो देना।

॥कवित्त॥

नव लाख जलपाण, दस लाख पंखी आण ।  
लाख तो इग्यारे जाण, कृमि कीट लाय है ॥  
बीस लाख घास फूस, तीस लाख पशु जूण ।  
चार लाख वानर जूण, सारी जूण आय है ॥  
सर्व है चौरासी लाख, चार खान माही भाख ।  
संत ज्यां री भरे साख, भिन्न भिन्न गाय है ॥  
राम जी ने नित गावे, संतां रे शरण आवे ।  
"तेज" कहे दुःख जावे, अबे सुख पाय है ॥२९॥

**अर्थ -** हिंदू धर्म और संत परंपरा में मानी जाने वाली "चौरासी लाख योनियों" (८४०००००) के वर्गीकरण और ईश्वर भक्ति के महत्व को दर्शाता है।

**नौ (९) लाख** प्रकार के जलचर (पानी में रहने वाले जीव) हैं और

**दस (१०) लाख** प्रकार के पक्षी (आकाश में उड़ने वाले) बताए गए हैं।

**ग्यारह (११) लाख** प्रकार के कीट-पतंगे और रेंगने वाले जीव (कृमि कीट) होते हैं, जो अपने कर्मों के अनुसार इस श्रेणी में जन्म लेते हैं।

**बीस (२०) लाख** प्रकार की वनस्पतियां (पेड़-पौधे, घास-फूस) हैं और

**तीस (३०) लाख** प्रकार के पशुओं की योनियाँ (जन्म) होती हैं।

**चार (४) लाख** प्रकार के मनुष्य और वानर (मानव सदृश) योनियाँ मानी गई हैं। इस प्रकार इन सबको मिलाकर सभी योनियों का हिसाब पूर्ण होता है। ये कुल मिलाकर चौरासी (८४) लाख योनियाँ हैं, जिन्हें चार खानियों (अण्डज, जेरज, स्वेदज और उद्भिज) में विभाजित किया गया है। संत और महापुरुष इस बात की गवाही (साख) देते हैं और उन्होंने अलग-अलग विस्तार से इनका गुणगान किया है। जो मनुष्य नित्य भगवान (राम जी) का नाम गाता



है और संतों की शरण में रहता है सन्त तेजराम जी कहते हैं कि ऐसा करने से मनुष्य के सारे दुख मिट जाते हैं और वह परम सुख (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

॥कवित्त॥

संतां री शरण लेह, भूखा ने भोजन देह ।  
 राम नाम करे नेह, एक इकतार है ॥  
 शील साच दया धर्म, यासूं नहीं लागे कर्म ।  
 मिटे तत्काल भ्रम, एतो बातां सार है ॥  
 सभी सूं निर्वैर चाले, बैर नां विरोध घाले ।  
 गुरां री आज्ञा में चाले, गुण आछा धार है ॥  
 पुराणां रो सार देखो, भावे जहां मन पेखो ।  
 "तेज" कहे साचो लेखो, यासूं भवपार है ॥३०॥

**अर्थ** - मनुष्य को संतों की शरण लेनी चाहिए (उनके सत्संग में बैठना चाहिए) और भूखे व्यक्ति को भोजन कराना चाहिए (सेवा भाव रखना चाहिए)। भगवान के नाम (राम नाम) से प्रेम (नेह) करना चाहिए और मन की लौ को प्रभु में एकतार (निरंतर) लगाए रखना चाहिए। जिसके जीवन में शील (अच्छा स्वभाव), सत्य (साच), दया और धर्म है, उसे बुरे कर्मों का फल (बंधन) नहीं भुगतना पड़ता, यानी वह कर्मों के बंधन से मुक्त हो जाता है। ऐसा आचरण करने से मन के सारे भ्रम और अज्ञान तुरंत मिट जाते हैं; यही समस्त ज्ञान और जीवन का सार (निचोड़) है। इंसान को सभी के साथ बिना किसी भेदभाव या दुश्मनी (निर्वैर) के रहना चाहिए। किसी के साथ न तो मन में बैर रखना चाहिए और न ही व्यर्थ का विरोध करना चाहिए। जो अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता है और अपने भीतर अच्छे गुणों को धारण करता है, वही सच्चा मार्गदर्शक है। आप चाहे जहाँ भी मन लगाकर देख लें या सभी पुराणों का सार निकालें, आपको यही निष्कर्ष मिलेगा (जो ऊपर बताया गया है)। सन्त तेजराम जी कहते हैं कि यही जीवन का सच्चा लेखा-जोखा (हिसाब) है। इन नियमों पर चलकर ही मनुष्य इस भवसागर (संसार रूपी समुद्र) से पार उतर सकता है।

॥ दोहा ॥

मिनख देह दुर्लभ घणी, मिले न बारम्बार ।  
 ताते संत पुकार है, भजलो सिरजनहार ॥३१॥

**अर्थ** - यह मनुष्य का शरीर (मिनख देह) बहुत ही दुर्लभ है। चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद यह बड़ी कठिनाई से मिलता है और यह बार-बार प्राप्त नहीं होता। इसीलिए (ताते) संत और महापुरुष बार-बार पुकार कर यानी जोर देकर कह रहे हैं कि इस

शरीर के रहते ही उस 'सिरजनहार' (सृष्टि को बनाने वाले ईश्वर) का भजन कर लो, अन्यथा यह अवसर हाथ से निकल जाएगा।

॥ दोहा ॥

गर्भ चेतावणी ग्रन्थ सुण, कर चेते जीव ।  
चौरासी जावे नहीं, मिलि हैं समरथ पीव ॥३२॥

**अर्थ** - हे जीव! तू इस 'गर्भ चेतावणी' नामक ग्रंथ को ध्यानपूर्वक सुन और इसे सुनकर सावधान (चेत) हो जा। यानी अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ। यदि तू इस ज्ञान को समझ लेगा, तो तूझे फिर से चौरासी लाख योनियों के चक्र में नहीं जाना पड़ेगा (जन्म-मरण से मुक्ति मिल जाएगी) और तूझे 'समरथ पीव' यानी सर्वशक्तिमान परमात्मा की प्राप्ति हो जाएगी।

॥ दोहा ॥

राम नाम रसना रटे, साची प्रीत लगाय ।  
निर्भय तीनों लोक में, सो बैकुंठां जाये ॥३३॥

**अर्थ** - जो मनुष्य अपनी रसना (जीभ) से निरंतर भगवान राम के नाम का जाप करता है और उनके चरणों में सच्ची प्रीति (सच्चा प्रेम) लगाता है, वह व्यक्ति तीनों लोकों में निर्भय (डर से मुक्त) हो जाता है, उसे काल या मृत्यु का भय नहीं सताता और अंत में वह 'बैकुंठ' (परमात्मा के परम धाम) को प्राप्त करता है।

॥ दोहा ॥

नारद जयन्ती शुभ दिवस, संवत बीस - तिरासी ।  
पूर्ण करी जेठ सुमति, टीका तेज - प्रकाशी ॥  
प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की, द्वितीया वार रविवार ।  
गर्भ - चेतावनी ग्रन्थ की, टीका भई तैयार ॥

**अर्थ** - नारद जयंती के शुभ अवसर पर, विक्रम संवत् २०८३ में, सुबुद्धि से जेठ दास जी ने श्री तेजराम जी महाराज के ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाने वाली इस "टीका" (व्याख्या) को पूर्ण किया। ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि और रविवार के दिन, "गर्भ चेतावनी" नामक महान ग्रंथ की यह टीका पूरी तरह बनकर तैयार हुई।

॥ इति श्री तेजराम जी महाराज विरचित 'गर्भ चेतावनी' ग्रन्थ समाप्त ॥